Vol 6 Issue 11 Dec 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

अमृतलाल नागर का संस्मरण साहित्य : एक दृष्टिक्षेप

डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे
हिंदी विभागाध्यक्ष, राजीव गांधी महाविद्यालय, मुदखेड
जिला–नांदेड (महाराष्ट्र)

सार :
हिंदी संस्मरण साहित्य में अमृतलाल नागरजी का नाम आदर के साथ लिया जाता है। "जिनके साथ जिया" (1973) यह नागर का साहित्यकारों पर लिखे संस्मराणों का संग्रह हैं। इसमें मुख्यतः शरत के साथ बितया कुछ समय, प्रसाद : जैसा मैने पाया, तीस बरस का साथीः रामविलास शर्मा आदि प्रमुख संस्मरण है। इन तीन संस्मराणों में क्रमशः बंगला के प्रसिद्ध लेखक शरत चंद्र चटोपायध्याय, जयशंकर प्रसाद तथा डॉ रामविलास शर्मा इनके साहित्यिक और जीवनगत विभिन्न संस्मरणीय यादों को प्रस्तुत किया गया हैं। स्वयं अमृतलाल नागर अपने जीवनगत एवं साहित्यिक संस्कारों को इनके साथ उत्कर्षित होने के भाव स्पष्ट करते है। अतः एक–एक अनुभव को स्मरण करते हुए उक्त तीनों भी रचनाकारों पर वैचारिक साहित्यिकी विचारधारा, अच्छे–बुरे अनुभव आदि को तटस्थता से लिखते हैं। विशेषकर तीस साल तक डॉ. रामविलास शर्मा के साथी होने से उनके साथ बिताये समय, यादों और अनुभवों को प्रदिर्घ रुप से आबद्ध करते है। उपरोक्त तीनों संस्मरण हिंदी संस्मरण साहित्य की अमूल्य निधि है।

बीज संज्ञा :
शरत के साथ बिताया कुछ समय, प्रसादः जैसा मैने पाया, तीस बरस का साथीः राविलास शर्मा।

प्रस्तावना :
बहुमुखि प्रतिभा के धनि अमृतलाल नागरजी ने हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लेखन

किया हैं। सामान्यतः हम यह देखते है कि, अधिकतम लेखकों ने कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता, एकांकी, निबंध, आदि में अपना साहित्यिक उत्कर्ष बनाया हैं। किंतु नागरजी ने इनके साथ–साथ संस्मरण साहित्य में भी विशेष योगदान दिया हैं। "जिनके साथ जिया" (1973) यह नागर का साहित्यकारों पर लिखे संस्मरणों का संग्रह हैं। जिसमें शरत के साथ बिताया कुछ समय (1938), प्रसादः जैसा मैने पाया (1950), तीस बरस का साथीः रावविलास शर्मा (1962) आदि महत्वपूर्ण संस्मरण हैं।

अपने अतीत को याद कर बयान करने की ललक मनुष्य में स्वभावतः होती ही हैं। इसी दृष्टि से नागरजी ने अपने अतीत के महत्वपूर्ण साथियों के साथ बिताये समय की यादों को संस्मरण के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं। विगत अनुभवों का स्मरण व्यक्ति को हर मोड़ पर किसी न किसी कारण वश होता रहता हैं। और उनके आधार पर कुछ नयीं कड़ियॉ जोडने का वह प्रयास करता जाता हैं । यह अनुभव और यादें व्यक्तित्व का मानो एक पुंज बनकर रह जाती हैं। लेखक की दृष्टि से अमृतलालजी ने अपने यादों और अनुभवों के सहारे संस्मरण लिखे हैं। अतः उनके संस्मरणों पर एक दृष्टिक्षेप निम्न रुप से हैं।

शरत के साथ बिताया कुछ समय(1938) :
बंगला के प्रसिद्ध लेखक शरत चंद्र चटोपाध्याय के साथ बिताये समय की यादों पर आधारित यह संस्मरण हैं। शरतजी की रचनाओं को पढ़कर उनके आदर्श की एक गहरी छाप नागरजी पर रही हैं। इतना ही नही तो उनकी मूल रचनाओं को पढ़ने के लिए नागर ने बंगला भाषा सीखी। नागरजी इस संस्मरण में स्वएं लिखते हैं कि,"एक–एक पुस्तक को कई–कई बार पढ़ा और आज जब उपन्यास अथवा कहानी पढ़ना मेरे लिए केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं, वरन् अध्ययन का प्रधान विषय हो गया हैं, तब भी मैं उनकी रचनाओं को अक्सर बार–बार पढ़ा करता हूँ। उनकी रचनाओं को मूल भाषा में पढ़ने के लिए ही मैने बॉग्ला सीखी।"[1] इससे एक पाठक की प्रबुध्दता, बेलाग लगन और उत्सुकता स्पष्ट होती हैं।

संस्मरण में नागरजी शरत के साथ कलकत्ते के प्रसंग को विशद करते हैं। शरत को पढ़ाने वाले एक प्रोफेसर का कहना वे नागर से शेअर करते हैं कि, शरत को एक प्रोफेसर ने कहा था– आप अपने लेखन में कभी किसी की व्यक्तिगत आलोचना न करना और अपने अनुभवों से बाहर की चीज पर कुछ भी न लिखना। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि, रचना करते समय कल्पना के अलावा समाज की वास्तविक भूमिका और हमने जो जिया उसको विषद करना महत्वपूर्ण हैं। यही दो बाते जान–बूझकर वे नागरजी को भी बताना चाहते थे। संस्मरण में आगे नागरजी ने शरत के खुश मिजाज व्यक्तित्व का भी वर्णन किया हैं। साथही साहित्यिक जीवन की लंबी बहस चलती हैं, शरत के गॉव, घर, मुहल्ले का वर्णन भी होता हैं। एक सामान्य परिवार के शरत उच्च विचारों से अवाम तक व्यापक रुप में पहॅचा हुआ व्यक्तित्व हैं।

शरत अपने जीवन के बहुत से प्रसंग नागरजी को बताते हैं कि, मुझे दुःख का दो बार आंतरिक अनुभव हुआ– एक बार अपने मकान में आग लग जाने से उनकी पूरी लायब्रेरी और एक अधुरा लिखा हुआ उपन्यास जलकर खाक हो गया। दूसरा यह कि, एक उपन्यास पूर्ण होने को आया था। एक पॅराग्राफ लिखना ही बाकी था कि वे शौचालय जाते ही उनके घर के कुत्ते ने जो हर चीज को तहस–नहस कर देने की आदतवाला था। उसने पूरा उपन्यास मुँह से नोच–नोच कर फाड़कर बिखरा दिया था। उनकी छह महिने की मेहनत पर पानी फेरा गया था।

शरत की मृत्यू के लगभग डेढ़ माह पहले नागर उन्हे मिलने पानीबाश गये थे। तब शरत काफी

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

कमजोर हो गये थे । नागर को उन्होंने बताय कि, अब किस दिन जाना होगा पता नहीं, स्वास्थ्य ने बेहाल कर दिया हैं। नागर ने उनका हौसला बढ़ाया, बातचित हुई और वे जब वापसी के लिए निकले तो, शरत ने कहा कि उनकी यादें जो रुपनारायण की बाढ़, पानी का बहाव, पात्र से पानी का उपर फैल जाना आदि उन्हे बेहद पसंद था ऐसा कहते–कहते वह रुपनारायण को देखने जाते हैं। नागर वापस आते हैं। आगे यह भी कहते हैं कि, कौन जानता था कि यह भेंट उनकी अंतिम भेंट हागी।

'जिनके साथ जिया' में संकलित यह संस्मरण शरतचंद्र चटोपाध्याय के जीवन–जगत की स्थिति एवं उनके निस्वार्थ साहित्य सेवा की कहानी बयान करता हैं। प्रस्तुत संस्मरण को लिखकर नागर ने उनके और शरत के स्नेह संबंधों को पाठाकें के समक्ष रखते हुए बहुत से अनुभवों और किस्सों को उपस्थित किया हैं।

प्रसाद : जैसा मैने पाया (1950) :

यह संस्मरण हिंदी के महान लेखक जयशंकर प्रसाद के साथ बिताये समय और अनुभवों पर आधरित हैं। नागर इसमे बताते है कि, लगभग–बीस–पच्चीस बार प्रसाद के साथ उनकी भेंट हुई हैं। आदरणीय भाई विनोदशंकर व्यास ने उनका प्रसाद से परिचय कराया था। प्रसाद के व्यक्तित्व के संदर्भ में वे लिखते हैं, "साहित्य की उस गंभीर मूर्ति को खिलखिलाकर हॅसते हुए देखा हैं। चिंतन के गहरे समुद्र को चीरकर निकली हुई सरल हॅसी उनके सहज सामर्थ्य की थाह बतलाती थी। यही उनका परिचय हैं जो मैने पाया हैं।"[2] प्रसाद के दृढ़ विश्वास की पृष्ठीभूमि इन पंक्तियों में देखी जा सकती हैं–

कर्म यज्ञ से जीवन के
सपनों का स्वर्ग मिलेगा;
इसी विपिन में मानस की
आशा का कुसुम खिलेगा।

विभिन्न समस्याओं के जाल में फॅसे (पिता और बड़े भाई की मृत्यू, पुराने घर का नाम और साख का प्रश्न, कर्ज का बोझ, कुटुंबियों के कुचक्रों की दुश्चिंता) सतरह साल के युवक प्रसाद को जो शक्ति मिलीवह उनकी अनवरत साहित्य साधना और निष्ठा के कारण।

नागरजी स्पष्ट करते हैं कि, प्रसाद के घर का वातावरण बिकट हो चला था। "कामायनी के महाकवि का परमोत्कर्ष जीवन की पहली कठिनाइयों की शिला पर विधाता को लेखनी की तरह अंकित हो गया था। उनका दार्शनिक रुप, उनका कवि–हृदय और कठिन साहित्य साधना का प्रारंभिक अभ्यास इन्ही बुरे दिनों विकसित हुआ।"[3] प्रसाद एक अच्छे घर–परिवार के होने से उनकी कविताएँ आदि साहित्य चोरी–छुपे चलता था। तब यह माना जाता था कि लेखक होने से लोग बरबाद हो जाते हैं। बड़े भाई शंभुरत्नजी ने उन्हे कविता करने से मना किया था। फिर भी प्रसाद की काव्य कला चोरी से उन्हे कविता करवाती ही थी। आगे चलकर प्रसाद एक निष्ठावान साहित्यकार बनकर उभरे। वे इतिहास के प्रति गहरी दृष्टि से लेखन करत थे। नागर कहते है कि उन्होने मुझे भी एक प्लांट पर उपन्यास लिखने के लिए दिया था। मैने उन्हे घर जाते ही लिखने का आश्वाषन दिया था। उपन्यास, नाटक और कहानियों में घटनाओं, चरित्रों या चित्रों के घात–प्रतिघात की प्रणाली मनोवैज्ञानिक आधार पाकर किस प्रकार सप्राण हो उठती हैं। यह मैने प्रसाद की बातों से ही जाना था। इन दिनों वे 'इरावती' लिख रहे थे।

सन् 1936 में जब वे प्रदर्शनी देखने लखनऊ आए तब नागर उनसे मिले थे। उपन्यास लिखने का वचन देने के सालभर बाद उनकी यह भेंट हुई थी। वे खेद से लिखते हैं कि मेरा वचन पुरा न हुआ था। जिससे मेरा मस्तक नत हुआ था। नागर संस्मरण में आगे यह कहते हैं कि तत्कलीन समय में मैथिलीशरण गुप्त की भारत–भारती और प्रसाद के ऑसू की पॅक्तियॉ गाते–गनगुनाते हुए लोग अक्सर मिल जाते थे। पर अब जमाना बदल गया हैं। आज साहित्य पढ़नेवाले बड़ी मुश्किल से मिलते हैं। इस प्रकार प्रसाद की साहित्य धारा कीर्ति एवं जनचेतना को अपने अनुभवों की मार्मिकता से इस संस्मरण में नागर ने लिखा हैं। वे अपने आदर्शो में प्रसाद को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। प्रसाद की व्यक्तिगत तथा साहित्यगत झलक इस संस्मरण में नागर ने प्राणवान बनाई हैं। जो जिया उसे उसी शब्दों में व्यक्त किया है। यह संस्मरण भी 'जिनके साथ जिया' में संग्रहित हैं। संस्मरण के माध्यम से लेखकीय जीवनानुभव रचनाकार की लेखनी से मानो प्रत्यक्ष रुप से देखने को मिलता हैं।

तीस बरस का साथी : रामविलास षर्मा(1962) :

यह संस्मरण हिंदी के प्रख्यात आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा के षष्ठिपूर्ति के अवसर पर डॉ. नत्थन सिंह द्वारा संपादित अभिनंदन ग्रंथ हेतु सन् 1962 में लिखा हैं। जो 'जिनके साथ जिया' संस्मरण संकलन में संकलित हैं। यह नागर का प्रदीर्घ संस्मरण हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ रहे रामविलास शर्मा के बारे में लोगों में काफी चर्चा थी कि, वे पढ़ाई में अत्यंत निपुण तथा अंग्रेजी में बहुत तेज हैं। महाकवि निराला रामविलास से प्रभावित होकर नागर से रामविलास की प्रशंषा में कहते–"बड़ा तेज हैं, ये डॉक्टर बनेगा एक दिन, अपने गुरु सिद्धांत को भी अंग्रेजी में पछाड़ेगा"[4] ऐसे प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व की चर्चा नागर सुनाने लगते है।। उनके मन में रामविलास को देखने की उत्कंठा सवार हुई थी। एक दिन निराला के यहॅ रामविलास से नागर की भेंट हुई। तब निराला ने रामविलास के साथ नागर के वैचारिक पंजे लड़ाये। तब राविलास से नागर की गहरी दोस्ती बन गयी। निराला के साथ रामविलास कभी–कभी नागर के घर भी आते थे। और साहित्यिक गप–शप होती रहती थी। रामविलास के साथ रहते अंग्रेजी और यूरोप की दूसरी भाषाओं पर काफी मंथन होता। यह दोस्ती लगभग तीस साल के लंबे आरसे में तब्दील होती है।

सन् 1938 में नागर ने 'चकल्ल्स' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। नागर कहते हैं कि, इसी साल नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, नरोत्तम प्रसाद नागर आदि लोग मेरे घर पर आये थे। पत्रिकाओं एवं कहानियों के बारे में काफी बहस भी हुई थी। उन्हे याद हैं कि, 'चकल्ल्स' पत्र के नाम बदलने में भी खूब चर्चा चली। इस संदर्भ में एक सुझाव यह भी आया था कि चकल्लस के स्थान परी पत्रिका का नाम 'मसखरा' रखा जाए। पर अंत में चकल्लस पर ही सभी सहमत हो जाते हैं। नौजवानों के रौब से 'चकल्ल्स' प्रकाशित हुआ। इससे शनै–शनै रामविलास और नागर का नैकट्य अधिक मजबुत हुआ। जिसमें रामविलास की खामियॉ और खुबियॉ नागर को देखने को मिलती रही। कई लोग रामविलास शर्मा के बारे में यह कहते हैं। कि, उनमें अकड़ की वृत्ति अधिक है। किंतु नागरजी को इसका कभी अनुभव नहीं हुआ। नागर को जो अनुभव हुआ वह इसके ठीक विपरित हैं। उनकी दृष्टि से रामविलास एक विनयशील, गंभीर, प्रतिभावान विचारक और विनम्र व्यक्तिमत्व हैं। हॉ इतना अवश्य हैं कि, "रामविलास की तीखे व्यंग्य–भरी फिस–फिसवाली हॅसी ने बहुत–से–कलेजों पर तलवार से वार किया। रामविलास का क्रोध भीतरी हैं, पर घुना नहीं। उनके क्रोध का बहिर्प्रदर्शन आमतौर पर उनकी जहरीली हॅसी व्यंग्य वचनों के रुप में ही होता हैं।"[5]

हिंदी के प्रति रामविलासजी की निष्ठा अत्यंत गहन थी। 'चकल्ल्स' पत्रिका के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत भी की। अलग–अलग योजनाओं को

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

मन में अवतरित कर कार्यों का विभाजन करते हुए हर एक से निष्ठापूर्वक काम भी करवा लेते थे। हर रविवार को गोष्ठी भी करवालेते। रामविलास की काम करने की कला एक चिकित्सक की सी थी। इसलिए निराला उन्हे डॉक्टर करते थे। यह उपाधि न होकर रामविलास का यह उपनाम सा बन गया था । सन् 1940 में वे डॉक्टर भी बन गये तब नागरजी फिल्म लेखक के रुप में मुंबई में बस चुके थे। रामविलास ने चिठ्ठी भेजकर अपने डॉक्टर होने की खबर दी थी। उस समय डॉक्टर होने की उपलब्धि बहुत महत्व रखती थी। आज की सी स्थिति तब नही थी।

लखनऊ का वातावरण साहित्यिक था और मुंबई का फिल्म लेखन का। नागर जी फिल्मी दुनिया के सहकारियों के साथ अपना अधिकतम वक्त बिताते थे। उधर रामविलास लखनऊ में थे। उनकी साहित्यिक गतिविधियॉ चरम उत्कर्ष को छू रही थी। उन्होंने नागर से हिंदी और हिंदी सेवी लोगों से आर्थिक मदद की अपिल की थी। परंतु नागरजी लागों के असहयोग के काराण असफल रहे। सन् 1939 में हिंदी साहित्य का सम्मेलन काशी में हुआ। इस संम्मेलन के लिए लखनऊ से रामविलास और नागर साथ ही गये थे। रामविलासजी का अत्यंत गहरा प्रभाव और प्रतिभा सम्मेलन पर पड़ी। उन्होंने जो निबंध प्रस्तुत किया वह अत्यंत तर्कयुक्त और विद्वत्तपूर्ण था। उनके जैसा अन्य किसी का ओजस्वी भाषण सम्मेलन में नही हुआ। इस निबंध ने रमविलास को सम्मेलन का हिरो बना दिया था। इसमें सम्मिलित सभी बड़े–बुढ़े उनपर गर्व करने लगे थे।

महाकवि निराला का रामविलास पर बेटे जैसा स्नेह था। निराला उनपर कभी गुस्सा करते तो रामविलास बड़ी चतुराई से उनके मन को जीत लेते थे। सन् 1944 में रामविलास मुंबई आये थे अब रामविलास मार्क्सवादी बन गये थे। प्रगतिशील लेखक संघ से उनका निकट का संबंध था। अब रामविलास कम्युनिष्ट पार्टी के सदस्य भी बन चुके थे। यह बात नागर को अच्छी नहीं लगी। रामविलास ने एक उदाहरण देकर उनकी नाराजगी दूर की थी–"कम्युनिष्ट पार्टी तुम्हारी कॉग्रेस की तरह नहीं हैं भैया! यह मत भूलो कि लेनिन के साथ बराबरी से रुसी जनता को नेतृत्व करनेवाला एक साहित्यकार गोर्की भी था। यह मत भूलो कि स्वयं मार्क्स ओर एंगेल्स राजनीतिक नेता नहीं वरन् विद्वान दार्शनिक थे। साहित्यकारों के लिए अगर किसी भी पार्टी में महत्व का स्थान हैं तो कम्युनिष्ट पार्टी में ही।"[6] सन् 1949 में रामविलास प्रगतिशील आंदोलन के प्रमुख नेता माने गए। यही से उनके और पार्टी के बीच रिश्तों में अंतर पड़ता गया। रामविलास मार्क्सवादी विचारधारा से आलोचना करते थे। कभी–कभी कुछ लोगों को यह भॉता नही था। एक बार पंत की 'स्वर्ण किरण' आदि नई कृतियों पर उन्होंने कड़ी आलोचना की । तो उनके बारे में लोग कुछ और सोचने लगे थे। इतना ही नही तो अपने से सदियों पुराने–पुरखे कालिदास से लेकर अपने समवर्ती लेखकों तक को उन्होंने नहीं बख्शा था। इससे नागरजी ने आवेश में आकर रामविलास को इस तरह की आलोचना करने से मना भी किया था। तब से उनमें थोड़ा परिवर्तन आया था।

रामविलास और अमृतलाल नागर दोनों भी लेखकीय दृष्टि से एस–दूसरे से प्रतियोगिता किया करते। जिससे लेखकीय अनुभवों एवं विचारों में प्रौढ़ता और वैचारिकता भर जाती। संस्मरण के अंत में नागर यह भी बताते हैं कि रामविलास मुझसे ढाई साल बड़े होकर भी मैं उनसे हमवयस्क के से संबंधों से स्नेह युक्त और सशक्त संबंध दोनों में थे।

उक्त विवेचन से यह सिद्ध होता हैं कि, हिंदी का एक पंड़ित दूसरे पंड़ित के साथ लगभग तीस बरस तक मिलजुलकर पांड़ित्य पूर्ण लेखकीय और जीवनानुभव के साथ जीवन यापन करते रहे हैं। यह संस्मरण पहले दोनों संस्मरण की तुलना में प्रदीर्घ हैं। तीस साल की यादों को यहॉ नागरजी ने संजोया हैं।

निष्कर्ष :

'जिनके साथ जिया' में संकलित इन तीन संस्मरणों में शरत चंद्र चटोपाध्याय, जयशंकर प्रसाद और रामविलास शर्मा नागरजी के अत्यंत निकट के साथी सिद्ध होते हैं। विशेषकर रामविलास शर्माजी जो कि हिंदी संसार में मार्क्सवादी विचारधारा के एक श्रेष्ठ आलोचक के रुप में विख्यात हैं। उनका लगभग तीस बरस का सहवास नागरजी के जीवन और विचारों के साथ अत्यंत महत्वपूर्ण रहा हैं। अमृतलाल जब मुंबई में फिल्म क्षेत्र से जुड़े रहे तब रामविलास लखनऊ में थे, फिर भी मुक्त विचारधारा के रुप में वे मुंबई में होकर भी उनके साथ बराबर जुड़े रहे। 'तकल्लुस' पत्रिका के निर्माण और उसकी रुप–रेखा का ढांचा जब रामविलास, अमृतलाल तथा अन्य कुछ मित्रों ने मिलकर बनाया तब वे अपने लेखकीय कला का अविष्कृत रुप मानने लगते हैं और रामविलास को वैचारिकता का एक सुदृढ़ व्यक्तिमत्व कहते हैं।

अमृतलाल नागर के साथी शरत चंद्र चटोपाध्याय जो बंगला के शीर्ष रचनाकार हैं, उनके साहित्य का अत्याधिक प्रभाव नागर पर पड़ा हैं। परिनाम स्वरुप उनकी मूल कृतियों को पढ़ने के लिए नागर ने बंगला भाषा तक सीखी। यह एक ऐसा उदाहरण हैं जो नागर की एक पाठक के रुप में अतिसंवेदनशीलता का परिचायक सिद्ध होता हैं। तो दूसरी ओर शरत के सृजन अविष्कार की महानतम उपलब्धि का। इस प्रकार शरत चंद्र चटोपाध्याय पर लिखा 'शरत के साथ बिताया कुछ समय' यह संस्मरण अत्यंत संस्मरणीय हैं।

'प्रसाद : जैसा मैने पाया' इस संस्मरण में छायावाद के प्रमुख आधारस्तंभ जयशंकर प्रसाद के साथ बिताये समय का और अनुभवों का उल्लेख हुआ हैं। इसमें जयशंकर प्रसाद अपनी रचनाओं को अपने घरवालों के साथ किस प्रकार छुपाकर रखते थे और धीरे–धीरे वे एक महान रचनाकार हुए इस बात का खुलकर जिक्र किया हैं। प्रसाद के साथ बैठकर नागरजी को साहित्यिक संस्कार पाने को मिले हैं। इतनाही नही तो इस महाकवि का स्वर नागर की क्रियाशीलता को हौसला देता रहा हैं। इस तरह नागर ने अपने लेखकीय अनुभवों को विकसित करते हुए विकास के साथी जिन–जिन साहित्यकारों से अच्छे–बुरे अनुभव पायें उनको याद कर संस्मरण लिखे हैं। उनके इन संस्मरणों से हिंदी संस्मरण साहित्य में अमूल्य योगदान हुआ है।

संदर्भ सूची :

1.www.hindisamaya.com इस साइट पर ऑनलाईन उपलब्ध संस्मरण।
2.वही
3.वही
4.वही
5.वही
6.वही

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org